संवाद

वर्णमाला शिक्षण में बाधायें

❑ लक्ष्मीनारायण शास्त्री

संवाद क्रम में इस बार हिन्दी भाषा शिक्षण के संदर्भ में वर्ण-शब्द विन्यास, उसकी व्युत्पत्ति, अर्थग्रहण और अर्थलोप की प्रक्रिया और उसके उच्चारण संबंधों पर एक टिप्पणी है । इस टिप्पणी का भाषा वैज्ञानिक पहलू हिन्दी शिक्षक के लिए अपेक्षित गंभीरता और गहरी अंतर्दृष्टि को संकेतित करता है। भाषा-शिक्षण संदर्भित समुदाय के प्रचलित भाषा-प्रयोग के प्रति संवेदनशील हो - यह इस टिप्पणी की अन्तर्ध्वनि है ।

प्राथमिक शिक्षण के क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों की उपलब्धियां प्रशंसनीय रूप से स्थापित होती जा रही है । पद्धति की नई-नई खोजों तथा उसमें सरलीकरण, लाघवीकरण, त्वरित फलदायिता से कीर्तिमान नवाचारों की ओर शिक्षाकर्मियों का ध्यान आकृष्ट हुआ है । पर यह नवाचार सीखने (लर्निंग) को नव्य, नव्यतर शैलियों की खोजों द्वारा केवल मैथड़ तक ही अपने को केन्द्रित किये हुए है । शिक्षा (आरंभिक शिक्षा) में शिक्षा के अन्य लक्ष्यों के साथ, इन शिक्षण शैलियों का नव-नव-अन्वेषण, प्रयोग वैभिन्न्य की शैशवानुकुलता तथा शिक्षा के प्रति आकर्षण जगाना एक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक उपादेयता तो है, परन्तु आरंभिक शिक्षा में प्रमुख साध्य-उच्चारित ध्वनि (वर्ण) और इसका समूहन चालू वर्ण माला, तथा वर्ण संकेत (अक्षर) और उसका समूहन (लिपि) का ज्ञान कोमल शैशव के लिए कितना कठिनाइयों से भरा है, और उस (वर्णमाला) ज्ञान में कितना दुरूह होता है, इस और नवाचार ने आंखे मूंद रखी हैं । हम चलने वाले को चाल को कितना ही सज्ज करें, पद प्रक्षेपण के नये-नये तरीके सिखाते रहें, पर यह न देखें कि रास्ता कितना उबड़खाबड़ और दुर्गम हो गया है, रास्ते में कैसे गहरे गर्त तथा पर्वत ढहे शिलाखण्ड बिछ गये हैं, उसे पार कराने में कोमल शैशव को, सुचाल होने पर भी, कितनी यंत्रणायें सहनी होंगी, नवाचार इस ओर ध्यान न देगा तो मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक भूल ही करेगा ।

हम नवाचार में शब्द के परिचय द्वारा खण्ड ध्वनि (वर्ण) का ज्ञान करायें या पुरानी परिपाटी से वर्णज्ञान द्वारा, उन्हें जोड़कर शब्द बोध (शब्द पढ़ना लिखना) सिखायें, सिखाने का लक्ष्य वर्ण या वर्णमाला तथा लिपि होता है । हम युगों से चली आ रही वर्णमाला से चिपके हुये हैं, यद्यपि भाषा एवं ध्वनियों में बदलाव आ गया है, यह बदलाव हमेशा से स्वभाविक रहा है । भाषा के बदलाव के साथ ध्वनियों (वर्णों) में भी बदलाव आता है, जैसे- ''बैल'' शब्द में - ब + अ + ल + अ होने से इसे 'ऐ' के अनुसार 'ब + अ + ल' बोला जाना चाहिए, पर यह 'ब + अ+ ल' बुलता है । 'ऐ' ध्वनि बदलकर 'अ' के उच्चारण के समान हो गई है । संस्कृतज्ञ इसे 'ब इ ल' ही बोलेगा, पर जनसामान्य सैल, गैल, मैल, बैल आदि शब्द अगर्भित बोलते हैं, हम 'ऐ' पढ़ाते हैं और इनमें 'अ' बुलवाते हैं । हम इस ध्वन्यन्तरण को स्वीकारने का साहस करके शिशुओं की कठिनाई को क्यों नही दूर करते ? कालिदास ने कहा है, '' पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' । इस लेखक की मान्यता है कि ''कथंच नव्येति न प्रशस्तमास्ति'' (पुराना ही क्यों लदा रहे, नये का स्वीकार क्यों नहीं होना चाहिये ?) । डा. बाबूराम सक्सैना, धीरेन्द्र वर्मा (''अच्छी हिन्दी'' पुस्तक में), डा. रामकुमार वर्मा ने कहा शुद्ध सही भाषा वो है जो जन में बोली जाती है । पुराने से चिपके रहना, पुनरुत्थान वादियों, पश्चगामियों का दृष्टिकोण है । हमें वर्णमाला में जो ध्वन्यन्तरण या ध्वनिलोप हो गये हैं, उन्हें स्वीकारना चाहिये और तदनुकूल पाठन करने की मानसिकता द्वारा नवाचार को सार्थक करना चाहिये । वर्णमाला पाठन की बाधाओं पर दृष्टि डालने से पहले कुछ संदर्भगत बातों पर पहले चर्चा कर ले ।

भाषा, वर्णमाला और लिपि

ध्वनि संस्थान द्वारा उच्चरित (भाषित) और श्रुति संस्थान द्वारा गृहित (श्रुत) संवाद माध्यम का नाम भाषा है । मानव समाज में पहले भाषा का प्रादुर्भाव हुआ, उसके सहस्त्राब्दीयों बाद लिपि प्रयोग में आयी । वेद शताब्दीयों तक कंठ परंपरा में चलते रहने के कारण श्रुति कहलाये । जनेऊ (उपनयन) ग्रहण करके ब्राह्मण 96 हजार, क्षत्रिय 92000, वैश्य 88000, ऋचायें कंठस्थ करने के लिए प्रतिश्रुत होते थे । अर्थात भाषा और उसकी ध्वनियां (वर्णमाला) सतत् चलती आ रही थीं । बाद में भारत में देवनागरी, खरोष्ठी (जो बांयी ओर से लिखी जाती थी) प्रयोग में आयी, शाम (सीरिया,

इराक आदि) में कीलाक्षरी - चीनी शब्द चिन्हों वाली, यूरोप में लैटिन (फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी, डच, आदि लिपियों की जननी) अरबी (अरब देशों की भाषाओं - फारसी, उर्दू आदि की जननी) लिपियों का जन्म बहुत बाद में हुआ । भाषा मूलत: भाषण-श्रवण अभिप्राय है, लिपि लेखन अभिप्राय है, इसलिए भाषा का ध्वनिमाला (वर्णमाला) मुख्य अंग और मूलाधार है । और लिपि (वर्ण-संकेत चिन्ह, अक्षर और उनकी माला) बाद में पैदा अवयव हैं । देवनागरी लिपि दोनों संस्कृत भाषा में (वैदिक और लौकिक संस्कृत) सभी प्राकृत भाषाओं (सोर्सएनी, माघदीव, अर्द्ध माघदीव, पैशाची आदि), अपभ्रंश भाषाओं तथा हिन्दी तथा मराठी की लिपि है । पंजाबी की गुरूमुखी (गुरू अर्जुन देव ने कैथीलिपि को गुरूलिपि बना दिया) है । शेष भाषाओं - कश्मीरी, गुजराती, बंगला, उड़ीया, असमिया, कन्नड़, तैलगू, तमिल, मलयालम आदि की अपनी-अपनी लिपियां हैं। परन्तु आश्चर्य की बात है कि प्राय: इन सभी भारतीय भाषाओं की लिपियां अलग होते हुए भी वर्णमाला एक ही है । वही 'कखगघड.'; चाहे उच्चरित कुछ भिन्न टोनों में होती हों । इन भाषाओं और उनसे सम्बद्ध वर्णमालाओं, काल विशेषों तथा क्षेत्र विशेषों में ध्वनि लुप्ति ध्वन्यन्तरण हमेशा से होता आया है तथा याद रखना चाहिये कि अब भी हो रहा है। अत: हमें इस परिवर्तन को सहजता जनाभिमुखता के कारण स्वीकारना ही चाहिये, खासतौर से चालू वर्णमाला के बदलाव को ।

ध्वनि लोप और ध्वन्यान्तरण

ध्वनि लोप और ध्वन्यान्तरण सदैव से होता रहा है । वैदिक संस्कृत की अनेक ध्वनियां लुप्त होकर लोकिक संस्कृत में नहीं आयीं, अनेक का बदलाव हो गया । '' गणानांत्वागणपति हवा, प्रियाणांतवाप्रियपति हवा ।'' ''यहां'' गुंग ध्वनि, क ख'' जिहवामूलीय;'' ''प फ'' उपमध्यमानिय, ''ष'' ध्वनि (जो ''ज'' से भिन्न होते हुए भी ''ज'' के करीब थी) लुप्त होकर लौकिक संस्कृत में नहीं आई । ''ज्ञ'' ध्वनि, जो ज् + ञ् + अ'' से बनी थी और ''ज्यञ्'' बुलती थी, संस्कृत में ''ग्य'' हो गई । ''यज्ञेन यज्ञमेयजन्त देवा:'' बुलती थी ''जज्ञञेन जजञमयजन्त, देवा: ।'' अब इसे बोलते हैं - यज्ञेन यज्ञामयजन्त देवा: ।'' (वैदिक मंत्र को भी कुछ को छोड़कर, सभी इस प्रकार बोलते हैं)। लौकिक संस्कृत की अनेक ध्वनियां प्राकृत भाषाओं तथा अपभ्रंश भाषाओं और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं (बंग्ला, हिन्दी, गुजराती आदि) में लुप्त या अवांतरित हो गईं । ''क्ष, त्र, ज्ञ, ष, ड., ञ'' हिन्दी में अवान्तरित या लुप्त हो गई हैं । कई ध्वनियों का नवोद्भव हो गया है या हो रहा है । 'अ' को बंग्ला में ॲ (ओ के करीब) बोला जाता है, इसीलिए ''हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे '' हमें ''होरे रामो, होरे रामो, रामो रामो होरे होरे'' सुनाई देता है । जोधपुर में ''सड़क सड़क सीधे चले जाओ'' हमें ''हड़क हड़क हीद्या चल्या ज्याव ।'' सुनाई पड़ता है । जोधपुर वाले बताते हैं कि ''हड़क'' की यह ध्वनि हाथ के 'ह' से है । उन्होंने इस ''स'' के 'ह' को उच्चारण करके भिन्न बताया, पर हमारे कान इसके भेद को पकड़ नहीं पाये । पंजाबी 'महेन्द्र' को 'महेन्दर' बोलते हैं वहां ''ड़'' ध्वनि नहीं है ।

लिपियों की ध्वनि मूलकता

लैटिन और अरबी लिपियों के मुकाबले भारतीय लिपियां ज्यादा ध्वनि मूलक हैं, अर्थात् हम जो बोलते हैं वैसा लिखते हैं, इसलिए वर्णमाला के प्रभाव से हमारी लिपियां ज्यादा वैज्ञानिक हैं। पर यह गर्व भी सम्पूर्ण सत्य नहीं है । रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है कि मुझे बंगला लिपि की ध्वनि मूलकता पर बड़ा गर्व था पर यूरोप जाकर पता चला कि बहुत सी ध्वनियों को बंगला लिपि में नहीं लिखा जा सकता । भाषा का विकास संस्कृति और परिवेश की गोद में होता है । भाषागत भिन्नता (उच्चारण में) का यही कारण है। ध्वनि (वर्णों) के संकेत चिन्ह (अक्षर लिपि) भी भाषागत उच्चरण के अनुकूल बोले जाते हैं , जैसे बंगला में '' 'अ' को 'ॲ' (ओ के करीब) । बहुत सी भाषाओं में कई ध्वनियां (लिपि में अक्षर /लैटर) अनुपलब्ध हैं, जैसे अंग्रेजी में मूर्धन्य ध्वनि के ''ह थ द ध'' नहीं है । इन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए नागरी वर्णमाला में आये बदलाव पर हमें विचार करना है।

नागरी वर्णमाला

इस लेखक का पौत्र दिल्ली के इंग्लिश मीडियम स्कूल की कक्षा आठ में पढ़ता था, अंग्रेजी अच्छी बोल और लिख लेता था। एक दिन हिन्दी पढ़ने में 'रम' को राम या रामा तथा 'कम' को 'काम' या 'कामा' पढ़ते देख कर इंग्लिश मीडियम में हिन्दी की उपेक्षा का कारण समझा, पर बाद में पता लगा, उसे वर्णमाला के ''क ख ग घ ड.'' - ''का खा गा घा ड.ा'' पढ़ाये गये थे। तथा जीवन भर के लिए गलत बीज बो दिये गये । वह 'अ' और 'आ' को हमेशा के लिए भूल गया । राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर जिले से लेकर पूरी यू.पी. और बिहार तक इसी प्रकार '' क ख ग घ ड.'' पढ़ाये जाते हैं तथा बंगाल में '' कॅ खॅ गॅ घॅ ङॅ.''। हम यहां '' क ख ग घ ड.'' पढ़ाते हैं, 'अ' तथा 'क' में 'अ' पढ़ाते हैं, उसका उच्चारण ''बैल'' के 'ऐ' अर्थात 'अ' जैसा पढ़ाते हैं। और जब वर्ण समूह ''शब्द'' पढ़ाते हैं - 'कमल', तो छात्र को इसे कैमै लै बोलना चाहिये, पर हम अपेक्षा करते हैं कि वह इस वर्ण

समूह - शब्द को कॅ मॅ लॅ पढ़े । शिशु को इस बदलाव वाले दुर्लघ शिखर में चढ़ने पर कितनी कठिनाई होती है इसे हम महसूस नहीं कर पाते । हम क्यों नहीं प्रारंभ में ही 'अ' को 'अॅ' तथा '' क ख ग '' को '' कॅ खॅ गॅ '' पढ़ाते हैं अर्थात अ का उच्चारण 'अ' न करवाकर 'अॅ' करवाना चाहिये, जो नहीं करवाते । जनभाषा की अनुकूलता के लिए और शिशुओं की कठिनाई दूर करने के लिए यह आवश्यक है । 'ऐ' (अई) ध्वनि 'बैल', 'सैर', शब्दों में जनभाषा में 'अई' (बइल) न बोलकर 'आ' की तरह 'बअल' बुलती है, अत: 'ऐ' को 'अ' के समान क्यों नहीं उच्चरित करवाने का अभ्यास करना चाहिये । 'औरत' शब्द के औ को संस्कृतज्ञ 'अ उ र त' बोलता है क्योंकि यह 'अ आ + ओ औ' से बनता है, पर जनभाषा में नई ध्वनि 'ओ + औ' के रूप में औरत बुलता है अत: 'औ' को 'ओ' के रूप में बुलवाया जाना चाहिये । हिन्दी में 'ऋ' 'ऌ' लुप्त हैं, इन्हें क्यों बांधे रखकर छात्रों के सिर पर रख कर बोझ बनाया जा रहा है । ऐसी 'ल' जो 'ड़' के करीब थी हिन्दी में गायब है । विसर्ग (:) संस्कृत के तत्सम शब्दों 'दु:ख' आदि में आता है, हिन्दी में 'दुख' प्रयुक्त होता है । ''क ख ग घ ड.'' का 'ड.' वर्ण माला पढ़ाते समय 'न' पढ़ाया जाता है जबकि संस्कृत में यह 'ग्यॅ' उच्चरित होता है । 'पंखा' और और 'पड.खा' दोनों तरह लिखा जाता है । 'ड.' कंठ ध्वनि होने से स्वयं कंण्ठय उच्चरित होने लगता है । इसे ''ग्यं'' के रूप में ही पढ़ाया जाना चाहिये । ''च छ ज झ ञ'' का 'ञ' तालव्य है तथा 'यअ' के रूप में संस्कृत में बोला जाता है ।

'चंचु और 'चञ्चु' दोनों रूपों में लिखा जाता है तथा परसवर्ण होकर तालव्य (स्वयं ही) बुलने लगता है, इसे 'यञ' ही पढ़ाया जाना चाहिये । 'श ष स' में 'श' तालव्य है, इसके उच्चारण में जीभ तालू के पास मुड़कर 'शामिल' में इसका तालव्य उच्चारण कराती है, उसी प्रकार 'स' दंत्य में जीभ दांतों को जरा सा छूकर 'सादा' के 'स' का दंत्य उच्चारण कराती है । पर मूर्धन्य 'ष' के उच्चारण में जीभ तालु से ऊपर मूर्धा पर मुड़कर (संस्कृत में) उच्चरित करती थी । संस्कृत के तत्सम शब्दों में 'पुष्ट, दुष्ट' में यह स्वयं पर सवर्ण (ट के अनुसार) मूर्धन्य हो जाती है, पर 'पोषक' शब्द में इसका मूर्धन्य उच्चारण स्पष्ट नहीं हो पाता । अत: जनभाषा में इसका लोप हो गया है । जोधपुर में लोग इसे अलग से बोलते थे, पर हमारे कान उस भेद को पकड़ने में असमर्थ रहे । 'क्ष' संयुक्त अक्षर संस्कृत में 'क + ष + अ' से बना है, पर हिन्दी में इसे 'क्छ' जैसा बोलने लगे हैं । 'ज्ञ' भी संस्कृत में 'ज् + ञ +अ' से बना है पर हिन्दी में यह पूर्व लिखित के अनुसार 'ग्य' के रूप में ध्वनि परिवर्तित हो गया है तथा इस रूप में स्वीकृत भी है । अन्य भी कुछ बदलाव हैं पर ये चर्चित बदलाव छात्रों को कठिनाइयां पैदा करते हैं, इसलिए इनका विवेचन किया गया है ।

नवाचार जिस प्रकार पद्धति में नव, नव्यतर शैलियां खोजने में प्रयत्नशील है, उसे इस पाठ्य वर्णमाला में भी साहस के साथ बदलाव लाकर शिक्षुओं की कठिनाई दूर करनी चाहिये । पाठक वर्ग ''कमल'' को वर्णमाला के पाठ के अनुसार ''कै मै लै'' से कॅ मॅ लॅ पढ़ाने में जो कठिनाइयां झेलता है सभी इससे परिचित हैं, तो क्यों नहीं 'क ख ग' को 'कॅ खॅ गॅ' पढ़ाना शुरू करें और नवाचार की सार्थकता सिद्ध करें । ◆

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र पुस्तकालय

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के एक अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के पुस्तकालय को अब सभी के लिए खोल दिया गया है। यहां 33 देशों की 16 विदेशी भाषाओं में पुस्तकों के साथ-साथ अंग्रेजी व 11 प्रमुख भारतीय भाषाओं की दस हजार से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं । लगभग 50 बाल पत्रिकाएं यहां नियमित आती हैं ।

बाल साहित्य के क्षेत्र में शोध कर रहे लोगों, प्रकाशकों, चित्रकारों आदि के लिए यह पुस्तकालय अनूठा शोध केंद्र है । इसकी औपचारिक शुरूआत पिछले दिनों ट्रस्ट के निदेशक निर्मलकांति भट्टचार्जी ने दीप प्रज्जवलित करके की ।

इस पुस्तकालय का सदस्यता शुल्क मात्र रुपये 100 है । साथ ही रुपये 500 की सुरक्षा निधि जमा करनी होगी, जो सदस्यता समाप्ति पर लौटा दी जायेगी । यहां एक साथ दो पुस्तकें ले आने की सुविधा है । यह पुस्तकालय सोमवार से शुक्रवार तक प्रत्येक कार्य दिवस पर प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक खुला रहेगा ।